रंगा सियार-पंचतंत्र

एक बार की बात है कि एक सियार जंगल में एक पुराने पेड के नीचे खडा था। पूरा पेड हवा के तेज झोंके से गिर पडा। सियार उसकी चपेट में आ गया और बुरी तरह घायल हो गया। वह किसी तरह घिसटता-घिसटता अपनी मांद तक पहुंचा।

कई दिन बाद वह मांद से बाहर आया। उसे भूख लग रही थी। शरीर कमजोर हो गया था तभी उसे एक खरगोश नजर आया। उसे दबोचने के लिए वह झपटा। सियार कुछ दूर भाग कर हांफने लगा। रंगाउसके शरीर में जान ही कहां रह गई थी? फिर उसने एक बटेर का पीछा करने की कोशिश की। यहां भी वह असफल रहा। हिरण का पीछा करने की तो उसकी हिम्मत भी न हुई।

वह खडा सोचने लगा। शिकार वह कर नहीं पा रहा था। भूखों मरने की नौबत आई ही समझो। क्या किया जाए? वह इधर-उधर घूमने लगा पर कहीं कोई मरा जानवर नहीं मिला। घूमता-घूमता वह एक बस्ती में आ गया। उसने सोचा शायद कोई मुर्गी या उसका बच्चा हाथ लग जाए। सो, वह इधर-उधर गलियों में घूमने लगा।

तभी कुत्ते भौं-भौं करते उसके पीछे पड़ गए। सियार को जान बचाने के लिए भागना पड़ा। गलियों में घुसकर उनको छकाने की कोशिश करने लगा पर कुत्ते तो कस्बे की गली-गली से परिचित थे। सियार के पीछे पड़े कुत्तों की टोली बढती जा रही थी और सियार के कमजोर शरीर का बल समाप्त होता जा रहा था।

सियार भागता हुआ रंगरेजों की बस्ती में आ पहुंचा था। वहां उसे एक घर के सामने एक बडा ड्रम नजर आया। वह जान बचाने के लिए उसी ड्रम में कूद पडा। ड्रम में रंगरेज ने कपडे रंगने के लिए रंग घोल रखा था।

कुत्तों का टोला भौंकता चला गया। सियार सांस रोक कर रंग में डूबा रहा। वह केवल सांस लेने के लिए अपनी थूथनी बाहर निकालता। जब उसे पूरा यकीन हो गया कि अब कोई खतरा नहीं है तो वह बाहर निकला। वह रंग में भीग चुका था। जंगल में पहुंचकर उसने देखा कि उसके शरीर का सारा रंग हरा हो गया है। उस ड्रम में रंगरेज ने हरा रंग घोल रखा था। उसके हरे रंग को जो भी जंगली जीव देखता, वह भयभीत हो जाता। उनको खौफ से कांपते देखकर रंगे सियार के दुष्ट दिमाग में एक योजना आई।

रंगे सियार ने डरकर भागते जीवों को आवाज दी, 'भाईयों, भागो मत मेरी बात सुनो।'

उसकी बात सुनकर सभी भागते जानवर ठिठके।

उनके ठिठकने का रंगे सियार ने फायदा उठाया और बोला, 'देखो-देखो मेरा रंग। ऐसा रंग किसी जानवर का धरती पर है? नहीं ना। मतलब समझो। भगवान ने मुझे यह खास रंग देकर तुम्हारे पास भेजा है। तुम सब जानवरों को बुला लाओ तो मैं भगवान का संदेश सुनाऊं।'

उसकी बातों का सब पर गहरा प्रभाव पडा। वे जाकर जंगल के दूसरे सभी जानवरों को बुलाकर लाए। जब सब आ गए तो रंगा सियार एक ऊंचे पत्थर पर चढ़कर बोला, 'वन्य प्राणियों, प्रजापति ब्रह्मा ने मुझे खुद अपने हाथों से इस अलौकिक रंग का प्राणी बनाकर कहा कि संसार में जानवरों का कोई शासक नहीं है। तुम्हें जाकर जानवरों का राजा बनकर उनका कल्याण करना है। तुम्हार नाम सम्राट ककुदुम होगा। तीनों लोकों के वन्य जीव तुम्हारी प्रजा होंगे। अब तुम लोग अनाथ नहीं रहे। मेरी छत्रछाया में निर्भय होकर रहो।'

सभी जानवर वैसे ही सियार के अजीब रंग से चकराए हुए थे। उसकी बातों ने तो जादू का काम किया। शेर, बाघ व चीते की भी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गई। उसकी बात काटने की किसी में हिम्मत न हुई। देखते ही देखते सारे जानवर उसके चरणों में लोटने लगे और एक स्वर में बोले, 'हे बह्मा के दूत, प्राणियों में श्रेष्ठ ककुदुम, हम आपको अपना सम्राट स्वीकार करते हैं। भगवान की इच्छा का पालन करके हमें बडी प्रसन्नता होगी।'

एक बूढे हाथी ने कहा, 'हे सम्राट, अब हमें बताइए कि हमारा क्या कर्तव्य है?'

रंगा सियार सम्राट की तरह पंजा उठाकर बोला, 'तुम्हें अपने सम्राट की खूब सेवा और आदर करना चाहिए। उसे कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए। हमारे खाने-पीने का शाही प्रबंध होना चाहिए।'

शेर ने सिर झुकाकर कहा, 'महाराज, ऐसा ही होगा। आपकी सेवा करके हमारा जीवन धन्य हो जाएगा।'

बस, सम्राट ककुदुम बने रंगे सियार के शाही ठाठ हो गए। वह राजसी शान से रहने लगा।

कई लोमडियां उसकी सेवा में लगी रहतीं, भालू पंखा झुलाता। सियार जिस जीव का मांस खाने की इच्छा जाहिर करता, उसकी बलि दी जाती।

जब सियार घूमने निकलता तो हाथी आगे-आगे सूंड उठाकर बिगुल की तरह चिंघाड़ता चलता। दो शेर उसके दोनों ओर कमांडो बॉडी गार्ड की तरह होते।

रोज ककुदुम का दरबार भी लगता। रंगे सियार ने एक चालाकी यह कर दी थी कि सम्राट बनते ही सियारों को शाही आदेश जारी कर उस जंगल से भगा दिया था। उसे अपनी जाति के जीवों द्वारा पहचान लिए जाने का खतरा था।

एक दिन सम्राट ककुदुम खूब खा-पीकर अपने शाही मांद में आराम कर रहा था कि बाहर उजाला देखकर उठा। बाहर आया तो चांदनी रात खिली थी। पास के जंगल में सियारों की टोलियां 'हू हू ऽऽऽ' की बोली बोल रही थी। उस आवाज को सुनते ही ककुदुम अपना आपा खो बैठा। उसके अंदर के जन्मजात स्वभाव ने जोर मारा और वह भी मुंह चांद की ओर उठाकर और सियारों के स्वर में मिलाकर 'हू हू ...' करने लगा।

शेर और बाघ ने उसे 'हू हू ...' करते देख लिया। वे चौंके, बाघ बोला, 'अरे, यह तो सियार है। हमें धोखा देकर सम्राट बना रहा। मारो नीच को।'

शेर और बाघ उसकी ओर लपके और देखते ही देखते उसका तिया-पांचा कर डाला।

सीखः नकलीपन की पोल देर या सबेर जरूर खुलती है।

अनुवाद - कुलदीप धर

रंगा सियार-पंचतंत्र

एक बार की बात है कि एक सियार जंगल में एक पुराने पेड़ के नीचे खड़ा था। पूरा पेड़ हवा के तेज झोंके से गिर पड़ा। सियार उसकी चपेट में आ गया और बुरी तरह घायल हो गया। वह किसी तरह घिसटते-घिसटते अपनी मांद तक पहुंचा।

कई दिन बाद वह मांद से बाहर आया। उसे भूख लग रही थी। शरीर कमजोर हो गया था तभी उसे एक खरगोश नजर आया। उसे दबोचने के लिए वह झपटा। सियार कुछ दूर भाग कर हांफने लगा। रंगा उसके शरीर में दम ही कहां रह गई थी? फिर उसने एक बटेर का पीछा करने की कोशिश की। यहां भी वह असफल रहा। हिरण का पीछा करने की तो उसकी हिम्मत ही न हुई।

वह खड़ा सोचने लगा। शिकार वह कर नहीं पा रहा था। भूखों मरने की नौबत आई ही समझो। क्या किया जाए? वह इधर-उधर घूमने लगा पर कहीं कोई मरा जानवर नहीं मिला। घूमता-घूमता वह एक बस्ती में आ गया। उसने सोचा शायद कोई मुर्गी या उसका बच्चा हाथ लग जाए। सो, वह इधर-उधर गलियों में घूमने लगा। वह खड़ा सोचने लगा। शिकार वह कर नहीं पा रहा था। भूखों मरने की नौबत आई ही समझो। क्या किया जाए? वह इधर-उधर घूमने लगा पर कहीं कोई मरा जानवर नहीं मिला। घूमता-घूमता वह एक बस्ती में आ गया। उसने सोचा शायद कोई मुर्गी या उसका बच्चा हाथ लग जाए। सो, वह इधर-उधर गलियों में घूमने लगा। सियार भागता हुआ रंगरेजों की बस्ती में आ पहुंचा था। वहां उसे एक घर के सामने एक बड़ा ड्रम नजर आया। वह जान बचाने के लिए उसी ड्रम में कूद पड़ा। ड्रम में रंगरेज ने कपड़े रंगने के लिए रंग घोल रखा था।

कुर्डे का ऐला फेंकता मला गया। मियार मांम रोक कर रंग में क्षुगा रहा। वह केवल मांम लेने के लिए अपनी थूथनी गाहर निकालता। जग उमे पूरा यकीन हो गया कि अग कोई पिटता नहीं है तो वह गाहर निकला। वह रंग में डीग चुका था। जंगल में पहुंचकर उमने देखा कि उमके मरीर का मारा रंग हरा हो गया है। उम टूम में रंगरेज ने हरा रंग घोल रखा था। उमके हरे रंग के ऐसे ही जंगली जीव देखता, वह डयडीत हो उठा। उनके पीछे मे कांपते देखकर रंगे मियार के दुष्ट दिमाग में एक योजना आई।

रंगे मियार ने डरकर डागते जीवों के आवाज दी, 'डाईयों, डागो मत मेरी गात सुनो।'
उमकी गात सुनकर मडी डागते जानवर ठिठके।

उनके ठिठकने का रंगे मियार ने फायदा उठाया और गोला, 'देखो-देखो मेरा रंग। ऐसा रंग किमी जानवर का धरती पर है? नहीं ना। मतलग ममझो। डगवान ने मुझे यह खाम रंग देकर तुम्हारे पाम डेजा है। तुम मग जानवरों के गुला लाओ तो मैं डगवान का मंदेम मुनाऊं।'

उमकी गातों का मग पर गहरा प्रडाव पड़ा। वे जाकर जंगल के दूमरे मडी जानवरों के गुलाकर लाए। जग मग आ गए तो रंगा मियार एक ऊंचे पत्थर पर चढ़ , 'वनू प्राणियों, प्रजापति ब्रह्मा ने मुझे खुद अपने हाथों मे उम अलौकिक रंग का प्राणी गनाकर कहा कि मंमार में जानवरों का कोई माभक नहीं है। तुम्हें जाकर जानवरों का राजा गनकर उनका कल्याण करना है। तुम्हारा नाम ममाट ककुदुम होगा। तीनों लोकों के वन्य जीव तुम्हारी प्रजा होंगे। अग तुम लोग अनाथ नहीं रहे। मेरी छत्रछाया में निडर होकर रहो।'

मणी एनवर वैंमे णी मियार के ग्रप्णीग रंग मे ग्रकराए फाए षे। उमकी गएतें ने टे एट्ट का काम किया। मेर, गाघ व ग्रीटे की णी ऊपर की मांम ऊपर ष्ठर नीग्रे की मांम नीग्रे रफ गाँ। उमकी गप्ट काएने की किमी मे फिभ्भ्र न फाँ। ग्रिपरे णी ग्रिपरे भारे एनवर उमके ग्ररल्ले में लेएने लगे ष्ठर एक भ्वर मे गेले, 'फे गफ्ना के ट्रट, प्राणिवें मे मेंभ्र ककुद्दम, फम ग्रुपके ग्रपना मम्राए भ्वीकार करटे फे। ष्ठगवान की उम्छा का पालन करके फमें गणी प्रमन्नता फेगी।'

एक वृग्ढे फाषी ने कफा, 'फे मम्राए, ग्रग फमें गताउए कि फमारा क्रा कर्तृव्य फे?'
रंगा मियार मम्राए की ररफ पंए उठाकर गेला, 'तुम्फे ग्रपने मम्राए की प्रुग मेवा ष्ठर ग्रुरम्न करना ग्राफिए। उमे केाँ टकलीफ नहीं फेनी ग्राफिए। फमारे पाने-पीने का माफी प्रगंध फेना ग्राफिए।'

मेर ने मिर झुकाकर कफा, 'मफारात्ए, एमा फी फेगा। ग्रुपकी मेवा करके फमारा एीवन धन्र फे एाएगा।'
गम, मम्राए ककुद्दम गने रंगे मियार के माफी ठाठ फे गाए। वफ राएमी माठ मे रफने लगा।
कई लेमड़ियां उमकी मेवा मे लगी रफटीं, ष्ठालू पांपा झुलाडा।
मियार एिम एीव का मांम पाने की उम्छा एफिर करडा, उमकी गलि ग्री एडी।
एग मियार घूमने निकलता टे फाषी ग्रुगे-ग्रुगे मूंड उठाकर गिगुल की ररफ गिंघाड़

गेए ककुद्दम का ग्रगार फी लगडा। रंगे मियार ने एक ग्रालाकी यफ कर ग्री षी कि मम्राए गनटे फी मियारें के माफी ग्रुग्रिम एरी कर उम एंगल मे ष्ठगा ग्रिया षा। उमे ग्रपनी एडि के

जीवों द्वारा पहचान लिए जाने का खतरा था।

एक दिन सम्राट ककुद्रुम खूब खा-पीकर अपनी शाही माँद में आराम कर रहा था कि बाहर उजाला देखकर उठा। बाहर आया तो चाँदनी रात खिली थी। पास के जंगल में सियारों की टोलियाँ 'हू हू ...' की बोली बोल रही थीं। उस आवाज़ को सुनते ही ककुद्रुम अपना आपा खो बैठा। उसके अंदर के जन्मजात स्वभाव ने ज़ोर मारा और वह भी मुँह चाँद की ओर उठाकर और सियारों के स्वर में मिलाकर 'हू हू ...' करने लगा।
शेर और बाघ ने उसे 'हू हू ...' करते देख लिया। वे चौंके, बाघ बोला, 'अरे, यह तो सियार है। हमें धोखा देकर सम्राट बना रहा। मारो नीच को।'
शेर और बाघ उसकी ओर लपके और देखते ही देखते उसका तिया-पाँचा कर डाला।

सीख: नकलीपन की पोल देर या सबेर ज़रूर खुलती है।

अनुवाद - कुलदीप ठाकुर